

पाठ 2 अध्याय 1

पिछले सप्ताह हमने व्यवस्थाविवरण के परिचय पर विचार किया ताकि हमें इसके अध्ययन के लिए कुछ संदर्भ मिल सके। लेकिन, कोई गलती न करें: तोरह की इस पाँचवीं पुस्तक की सही व्याख्या करने का आधार पिछली चार पुस्तकें हैं, प्रत्येक एक दूसरे पर आधारित है। हालाँकि, सामान्य तौर पर, हमें व्यवस्थाविवरण को व्यवस्था पर एक उपदेश के रूप में देखना चाहिए, और मैंने आपके लिए पहाड़ी उपदेश के साथ एक समानता खींची, जो व्यवस्था के बारे में यीशुआ का उपदेश था।

व्यवस्थाविवरण मोआब में इस्राएल की यात्रा को आगे बढ़ाता है, जिसमें मूसा इस्राएल के लोगों को अपना अंतिम संबोधन देता है। तीनों संबोधन इतिहास और व्यवस्था को आपस में जोड़ेंगे, और जैसा कि हम अक्सर देखेंगे कि उनके 40 साल के जंगल के सफर पर कुछ घटनाओं के सटीक तथ्य मूसा द्वारा उसी तरह प्रस्तुत नहीं किए गए हैं जैसे हम उन्हें पहले की तोरह पुस्तकों में पढ़ते हैं क्योंकि वह उन्हें पीछे मुड़कर देखने के प्रकाश में प्रस्तुत कर रहा है।

इसलिए, जब हम व्यवस्थाविवरण के पहले अध्याय को पढ़ना शुरू करते हैं, तो कल्पना करें कि मूसा मोआब में एक ऊँची पहाड़ी पर खड़ा है, जो वादा किए गए देश को देख रहा है जो यर्डन नदी के पश्चिमी तट पर एक पत्थर फेंकने की दूरी पर है। वह इस्राएल के नेताओं और बुजुर्गों को संबोधित कर रहा है, भले ही उसके शब्दों का उद्देश्य पूरे इस्राएल को सुनना है, वास्तव में ऐसा कोई व्यावहारिक तरीका नहीं है जिससे उसकी आवाज़ कुछ सौ से ज़्यादा लोगों को सुनाई दे।

व्यवस्थाविवरण अध्याय 1 पूरा पढ़ें

मैं 5 मिनट में एक बहुत ही दिलचस्प घटना को समझाना चाहता हूँ जो व्यवस्थाविवरण के पहले 5 पदों में दिखाई देती है, क्योंकि यह तोरह की 5 पुस्तकों में से प्रत्येक के आरंभ में भी दिखाई देती है।

और, घटना यह है: व्यवस्थाविवरण के पहले 5 पदों में इब्रानी अक्षरों का एक दोहराव पैटर्न है जो एक निश्चित क्रम में "तोरह" शब्द को दर्शाता है। इब्रानी अक्षर "हेह" से शुरू करते हुए जो मोशे के नाम का अंतिम अक्षर है, और फिर 48 अक्षरों की गिनती करते हुए, हम इब्रानी अक्षर "रेयेश" पर पहुँचते हैं? 48 और अक्षर और हमें इब्रानी अक्षर "वव" मिलता है? और फिर 48 और अक्षर और हमें इब्रानी अक्षर "वव" मिलता है? यानी, हमें तोरह की वर्तनी पीछे की ओर मिलती है।

अब यह इतना आश्चर्यजनक नहीं होगा यदि ऐसा न हो कि हम व्यवस्थाविवरण से पहले आने वाली तोरह की 4 पुस्तकों की शुरुआत में एक समान पैटर्न देखते हैं। उत्पत्ति 1:1-5 में हम तोरह शब्द का दोहराव पैटर्न पाते हैं, जिसे आगे की ओर (सामान्य रूप से) लिखा जाता है, जिसमें प्रत्येक अक्षर शब्द को ठीक 49 अक्षरों के अंतर पर बनाता है। "शुरुआत में" शब्द के अंतिम इब्रानी अक्षर (बेरेशित) से शुरू करके, और फिर हर 49वें अक्षर की गिनती करके, हम तोरह शब्द को सही तरह से लिखते हैं।

ठीक यही बात निर्गमन 1:1–6 में भी घटित होती है, आरंभिक वाक्यांश “ये नाम हैं” में दूसरे शब्द (शेमोट) के अंतिम अक्षर से शुरू करते हुए, हमें इब्रानी अक्षर तब मिलता है। फिर ठीक 49 अक्षरों की गिनती करने पर, हमें एक वव मिलता है, फिर 49 और अक्षर और हमें एक रेयश मिलता है, और फिर 49 और अक्षर और हमें एक हेह मिलता है, जो तोरह शब्द बनाता है।

लैव्यव्यवस्था में यह थोड़ा बदल जाता है। लैव्यव्यवस्था, पुरोहितों की पुस्तक में, हमें ईश्वरीय नाम YHWH को लनकीमल–अंजीमल ‘???’ अक्षरों से लिखा जाता है, जो ठीक 7 अक्षरों के अंतर पर होते हैं। लैव्यव्यवस्था के पहले शब्द “और उसने बुलाया” में लनक से शुरू करके, और फिर हर 7वें अक्षर की गिनती करके, हमें ईश्वर का नाम येहोवे मिलता है।

जब हम संख्याओं में जाते हैं, तो हमें व्यवस्थाविवरण की तरह, तोरह शब्द एक सटीक अंतराल में उल्टा लिखा हुआ मिलता है। संख्याओं में “मूसा” शब्द की पहली घटना से शुरू करते हुए, हम “हेह” (मूसा का अंतिम अक्षर मोशे का नाम) लेते हैं और फिर 49 अक्षर गिनते हैं और हमें एक रेयश मिलता है, 49 और अक्षर और हमें एक वव मिलता है, 49 और अक्षर और हमें एक तव मिलता है, तोरह को इस तरह से लिखा जाता है रिवर्स।

लेकिन, फिर हम एक और पैटर्न देखते हैं, उत्पत्ति में शुरू करते हुए, तोरह को आगे की ओर लिखा गया है, निर्गमन में तोरह को आगे की ओर लिखा गया है, लैव्यव्यवस्था में हमारे पास परमेश्वर का नाम यहोवा है, फिर संख्या में तोरह को पीछे की ओर लिखा गया है और अंत में व्यवस्थाविवरण में तोरह को पीछे की ओर लिखा गया है।

49 अक्षरों का अंतर महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह 7— 7 है। निःसंदेह, परमेश्वर की दिव्य संख्या 7 है, और लैव्यव्यवस्था में परमेश्वर के नाम के अक्षरों के बीच अंतर 7 होगा, जो कि काफी आश्चर्यजनक है।

लेकिन, फिर सवाल यह उठता है कि व्यवस्थाविवरण एक में अक्षरों के बीच का अंतर 49 से कम क्यों है? “तोरह” शब्द के अक्षरों के बीच का अंतर 48 क्यों है, 49 क्यों नहीं? मैं आपको अपनी राय देता हूँ और मैं चाहता हूँ कि आप इसे मेरी राय के रूप में ही लें।

व्यवस्थाविवरण पहली 4 पुस्तकों से अलग है क्योंकि यह मूसा का उपदेश है। पहली 4 पुस्तकों में एक हद तक या किसी अन्य हद तक ईश्वर की ओर से प्रत्यक्ष वाणी शामिल है, जिसकी शुरुआत इस तरह के शब्दों से होती है, “और, प्रभु ने कहा” ऐसा और ऐसा। यहाँ व्यवस्थाविवरण में यह अलग है।

मूसा ने ऐसा–ऐसा कहा। हाँ, मूसा ईश्वर का मध्यस्थ है और वह ईश्वर की ओर से बोलता है, लेकिन मूसा ईश्वर नहीं है। इसलिए मूसा के तोरह (मूसा के निर्देश) का मूल्य, ईश्वर के तोरह (ईश्वर के निर्देश) के मूल्य की तुलना में कम है, ठीक एक कम।

हम सभी ने बाइबल कोड के बारे में कुछ न कुछ सुना है और इसमें कोई संदेह नहीं है कि मैंने जो आपके सामने प्रस्तुत किया है वह मात्र गणितीय विसंगति या संयोग नहीं है। यह कोई दुर्घटना नहीं है, इसे जानबूझकर वहाँ रखा गया था। इसलिए मैं उन लोगों में से हूँ जो बाइबल कोड में कुछ हद तक वैधता देखते हैं। मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ कि सभी प्रकार के अक्षरों के अनुक्रम और विकर्णों पर पाए जाने वाले अक्षरों आदि को एक “बाइबल कोड” बनाने के लिए कहा जाता है जो हमें भविष्य बताता है। बाइबल में शब्दों और अक्षरों की विशाल संख्या के साथ इसमें कोई संदेह नहीं है कि अगर कोई ध्यान से देखें तो नकली पैटर्न मिल सकते हैं। लेकिन मैं उन्हें दिव्य नहीं मानता।

दूसरी ओर, मैंने जो आपके सामने प्रस्तुत किया है वह तार्किक, तर्कसंगत और चमत्कारी है, पूरी तरह से ईश्वर के सिद्धांतों के अनुरूप है। इसके अलावा (व्यावहारिक दृष्टिकोण से) इस अंतर्निहित पैटर्न को शामिल करके, नकल करने वालों की गलतियों और संशोधनों और जालसाजी को आसानी से पहचाना जा सकता है क्योंकि एक गलत वर्तनी या एक लापता शब्द या एक पुनर्व्यवस्थित वाक्य सटीक अक्षर अनुक्रम और संख्या गणना को बर्बाद कर देगा। मैं तोरह की 5 पुस्तकों में से प्रत्येक के आरंभ के पहले 5 पदों में अंतर्निहित अद्भुत पैटर्न को ईश्वर की ओर से हमें दी गई गारंटी के रूप में देखता हूँ, और मैं एक तरह से प्राचीन “वर्तनी जाँच” करता हूँ कि यह वास्तव में महान **मैं हूँ** जिसने हमें यह बाइबल दी है, और यह मान्य है, और यह सटीक है।

शुक्र है कि भटकना लगभग समाप्त हो गया है; इस्राएल के लोग उस भूमि पर अधिकार करने के करीब हैं जिसे 6 शताब्दियों पहले अब्राहम की वाचा में आधिकारिक तौर पर उनके लिए अलग रखा गया था। लेकिन भूमि पर अधिकार शांतिपूर्ण तरीके से नहीं होने वाला है: 600,000 पुरुषों की इब्रानी सेना कई अलग-अलग छोटे-मोटे शक्तिशाली लोगों और शक्तिशाली राजाओं और राज्यों से बलपूर्वक भूमि छीनने जा रही है, जिन्हें एक साथ मिलाकर, सामान्य शब्दों में कनानी कहा जाता है, क्योंकि वे कनान नामक सामान्य क्षेत्र में रहते हैं। इनमें से किसी भी व्यक्ति का इरादा केवल इसलिए अपने क्षेत्र को इस्राएल को सौंपने का नहीं है क्योंकि वे दावा करते हैं कि उनके परमेश्वर ने उन्हें अपना क्षेत्र दिया है।

मूसा द्वारा यह संबोधन जाहिर तौर पर उसकी अपनी इच्छा से दिया गया था। निश्चित रूप से, परमेश्वर के मध्यस्थ के रूप में, यह उसका अधिकार है कि वह परमेश्वर के लोगों को अपनी इच्छानुसार संबोधित करे, जैसा कि जलती हुई झाड़ी के पास निर्धारित किया गया था कि मूसा जो कुछ भी बोले वह ऐसा हो मानो परमेश्वर ने कहा हो।

आइए तुरंत कुछ मुद्दों पर बात करें सबसे पहले यह बात है कि मूसा से हमें जो मिल रहा है वह पिता की ओर से कोई भविष्यवाणी नहीं है। पहली नज़र में यह थोड़ा परेशान करने वाला लग सकता है; लेकिन वास्तव में बाइबल का बड़ा हिस्सा यहोवा की ओर से सीधे की गई भविष्यवाणी से नहीं बना है, बल्कि इसमें

इतिहास, कहानियाँ, कविताएँ, गीत, प्रगतिशील प्रकाशन और प्रभु और उनकी आज्ञाओं के बारे में बहुत सारी टिप्पणियाँ हैं।

एक दैवीय कथन एक प्रत्यक्ष और स्पष्ट ईश्वरीय कथन है जिसे सीधे नामित देवता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है। बाइबल में ईश्वर की ओर से सबसे प्रत्यक्ष दैवीय कथन तोरह में हैं और वे व्यवस्था हैं जो माउंट सिनाई पर मूसा को दिए गए थे। अगले सबसे प्रत्यक्ष दैवीय कथन नए नियम में ईश्वर के मसीहा, यीशुआ से आते हैं, फिर भी इन नया नियम दैवीय कथनों का बड़ा हिस्सा केवल वही दोहराता और याद दिलाता है जो ईश्वर ने पुराना नियम भविष्यवक्ताओं के माध्यम से कहा था, या बहुत पहले दिए गए व्यवस्था की व्याख्या है, बेशक जहाँ अधिकांश विश्वासी उलझ जाते हैं, वह यह है कि वे सोचते हैं कि यीशुआ ने जो पेशकश की और जो बोला वह बिल्कुल नया था, क्योंकि उन्होंने न तो तोरह और पुराना नियम को पढ़ा है और न ही उन्हें सिखाया गया है।

यह जानना बहुत आसान है कि जब हम किसी और चीज़ के बजाय किसी दिव्य भविष्यवाणी का सामना करते हैं, क्योंकि दिव्य भविष्यवाणी आमतौर पर इन शब्दों से शुरू होती है, ".....तब परमेश्वर ने कहा" या "यहोवा ने मूसा से कहा" या इसी तरह की कोई बात। दूसरे शब्दों में परमेश्वर के नाम का आह्वान किया गया था, जिसने यह निर्धारित किया था कि ऐसा-ऐसा होना था या कोई नया व्यवस्था बनाया गया था। हम सही रूप से यह मान लेते हैं कि यीशु के शब्द ईश्वरीय हैं, क्योंकि वह स्वयं को परमेश्वर होने का दावा करता है, जो (निःसंदेह) हमारी ईसाई धर्म का सम्पूर्ण आधार है।

फिर भी हम यह देखे बिना नहीं रह सकते कि पिता परमेश्वर (या परमेश्वर की आत्मा के रूप में वचन) ने तोरह में अपने दिव्य वाणी को कैसे प्रस्तुत किया, इसकी तुलना में यीशुआ ने नए नियम में कैसे बात की, इसमें अंतर है, क्योंकि यीशुआ मनुष्य और परमेश्वर, महायाजक और मध्यस्थ, आम आदमी और राजा का यह अबूझ संकर है। इसलिए भले ही चर्च में आम तौर पर यह चित्रित किया जाता है कि यीशु ने पुराने व्यवस्था को समाप्त कर दिया और मानव जाति को एक नया व्यवस्था दिया, फिर भी वह मत्ती 5:17-19 में स्पष्ट रूप से कहता है कि ऐसा नहीं है। इसके बजाय, यीशुआ ने परमेश्वर के नियमों (जैसा कि मूसा को दिया गया था) को उन परंपराओं से अलग किया जो सदियों से मनुष्यों ने उन व्यवस्थाओं के बारे में विकसित की थीं; परंपराएँ जो यहूदी धर्म का आधार बन गई थीं (और उनमें से अधिकांश गलत सोच वाली थीं), और अक्सर तोरह की भावना के खिलाफ स्थापित की जाती थीं। और मसीहा ने मूसा के नियमों के दिव्य रूप से इच्छित अर्थ को भी समझाया और व्याख्या की, और आने वाले मसीहा (अब मौजूद) के बारे में भविष्यवक्ताओं के कितने शब्द उनमें पूरे हुए।

मुद्दा यह है कि मूसा (यहाँ व्यवस्थाविवरण में) परमेश्वर के आधिकारिक मध्यस्थ के रूप में बोल रहा है, लेकिन मूसा अपने स्वयं के शब्दों का उपयोग कर रहा है (जितने प्रेरित हैं) और ये संबोधन इसलिए नहीं कर रहा है क्योंकि परमेश्वर की ओर से कोई नई भविष्यवाणी आ रही है, बल्कि इसलिए क्योंकि मूसा ने तय किया

है कि इस समय इसकी आवश्यकता है। मूसा के अधिकांश शब्द जंगल की यात्रा का वर्णन और इस बात की लंबी व्याख्या है कि इब्रानियों की इस नई पीढ़ी के लिए व्यवस्था कैसे लागू किया जाना चाहिए, जिनमें से अधिकांश या तो छोटे बच्चे थे या जब मूसा ने लगभग 40 साल पहले पहली बार व्यवस्था प्राप्त किया था, तब वे अभी तक अजन्मे थे, उन्हें इन व्यवस्थाओं को उस नई स्थापित स्थिति में लागू करना चाहिए जिसमें वे खुद को पाने वाले हैं। अधिकांश समय मसीह भी परमेश्वर के मध्यस्थ के रूप में बोल रहा है (यद्यपि मूसा से उच्च मध्यस्थ), और इसलिए वह यह नहीं कहता है कि वह नए व्यवस्थाओं को लागू कर रहा है या पुराने व्यवस्थाओं को बदल रहा है।

दूसरा मुद्दा जिस पर मैं बात करना चाहता हूँ, वह तथाकथित पवित्र युद्ध से संबंधित है जिसे इस्राएल कनान की भूमि पर विजय प्राप्त करने के लिए शुरू करने वाला है। हमें सावधान रहना चाहिए कि हम इस बहस या बचाव में न पड़ें कि दुनिया के खिलाफ मुसलमानों का वर्तमान पवित्र युद्ध (जिसे जिहाद कहा जाता है) वही है जो ईश्वर ने कनान पर कब्जा करने के बारे में तोरह में निर्धारित किया है। यह उन कई उदाहरणों में से एक है जब एक छोटे से वाक्यांश का अर्थ वर्षों में बदल जाता है और एक अलग रूप ले लेता है, लेकिन अर्थ में उस छोटे से बदलाव के बड़े परिणाम हो सकते हैं। मैंने मुस्लिम प्रवक्ताओं, समाचार टिप्पणीकारों, पत्रकारों और यहाँ तक कि पादरियों को मुस्लिम पवित्र युद्ध के बारे में चर्चा करते हुए सुना है कि यह कनान पर मूसा और यहोशू के पुराने नियम के पवित्र युद्ध के बराबर है।

दोनों के बीच का अंतर रात और दिन जैसा है। इस्लामिक जिहाद का मतलब है दुनिया को जबरन अपने धर्म में परिवर्तित करना। यह मुसलमानों की एक सेना द्वारा हिंसक तरीके से दुनिया भर में खिलाफत (यानी एक विश्व इस्लामी धर्मतंत्र) स्थापित करने के बारे में है। यह उन लोगों को मारने के बारे में है जो कुरान से सीधे निर्देश के रूप में धर्म परिवर्तन नहीं करना चाहते हैं (हालाँकि कुरान यहूदियों और ईसाइयों को कुछ हद तक छूट देता है, जिन्हें अपनी जान बख्शी जा सकती है अगर वे इस्लाम द्वारा शासित होने और इस्लामी सरकार के प्रति पूरी तरह से समर्पित होने के लिए सहमत हो जाएँ)।

तोरह में विदेशियों के बीच इब्रानियों के धर्म को फैलाने के लिए कनान पर विजय प्राप्त करने का कोई विचार नहीं है। यह आने वाला पवित्र युद्ध मुर्तिपूजक कनानी धर्मों के लोगों को यहोवा की पूजा में परिवर्तित करने और बचे हुए लोगों को मारने के बारे में नहीं है। बल्कि यह भूमि के लिए एक युद्ध है, एक बहुत ही खास तौर पर नामित भूमि का टुकड़ा। वास्तव में मूसा ने आने वाले पदों में सावधानीपूर्वक बताया है कि कैसे इस्राएलियों ने जहाँ भी संभव हो एदोमियों और मोआबियों के साथ संघर्ष से परहेज किया क्योंकि ये गैर यहूदी उस भूमि के सही मालिक हैं जो उनके पास थी क्योंकि प्रभु ने इसे उनके लिए अलग रखा था और उन्हें सौंपा था। क्या यह आपको आश्चर्यचकित करता है कि परमेश्वर गैर-इस्राएलियों के लिए कुछ क्षेत्र निर्धारित करेंगे, और फिर इसे रखने के उनके अधिकार को लागू करेंगे? खैर, वास्तव में ऐसा नहीं होना चाहिए। हालाँकि हम उसे इस्राएल का परमेश्वर कहते हैं, यहोवा स्पष्ट करता है कि वह हर किसी और हर चीज़ का परमेश्वर है:

कि उसका शासन पृथ्वी, ब्रह्मांड और उससे परे सर्वोच्च है। इसलिए बेशक उसने पहले से ही तय कर रखा है कि कौन कहाँ, कब, किन परिस्थितियों में रहेगा और इसी तरह की अन्य बातें, और इसमें गैर—यहूदी और इब्रानी दोनों शामिल हैं। उसने इब्रानियों के लिए जो स्थान निर्धारित किया था वह कनान था।

इसलिए हमें कभी भी इस दिखावटी तर्क का शिकार नहीं होना चाहिए कि इस्लाम वर्तमान में जो कर रहा है वह किसी तरह से वैसा ही है जैसा कि इब्रानी लोग कनान पर विजय प्राप्त करते समय कर रहे थे। न ही हमें आतंकवाद या आतंकवादी उद्देश्य और मानसिकता को पुराने नियम के अनुसार कनान पर विजय प्राप्त करने के समान समझना चाहिए। ईश्वर का एकमात्र सांसारिक राज्य वर्तमान में कनान की भूमि के रूप में दर्ज की गई अच्छी तरह से परिभाषित सीमाओं के भीतर होना था और उससे परे नहीं। कनानियों को धर्मांतरित करने का कोई आदेश नहीं था, न ही उन पर नरसंहार करने का कोई आदेश था। लक्ष्य कनान के गैर—यहूदियों को बाहर निकालना था, केवल वे लोग जो वहाँ रहने और मौत से लड़ने का विकल्प चुनते थे, उन्हें ही मार दिया जाता था।

अब कृपया मेरी बात सुनें: शायद सबसे अजीब विडंबना यह है कि यह “पुराने नियम का ईश्वर” नहीं है जो कनान और अन्य विदेशियों से कहता है, “धर्म परिवर्तन करो या मर जाओ” जैसा कि बहुत से गलत सूचना प्राप्त ईसाई सोचते हैं (और पुराने नियम, व्यवस्था और यहूदी लोगों पर बहुत से ईसाई विचारों के मूल में वही है), बल्कि बाइबल में ईश्वर द्वारा निर्देशित एकमात्र “धर्म परिवर्तन करो या मर जाओ” परिदृश्य नए नियम में, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में है, जब यीशु मसीह पवित्र युद्ध (जिसे आम तौर पर आर्मागेडन कहा जाता है) में संतों का नेतृत्व कर रहे हैं जिसमें केवल वे लोग ही पृथ्वी पर जीवित रहने की अनुमति देते हैं जो यीशुआ को परमेश्वर और स्वामी के रूप में स्वीकार करते हैं। आर्मागेडन पूरी पृथ्वी के लिए एक लड़ाई है, कनान के लिए नहीं। जो लोग प्रभु के विरुद्ध हैं, उनके लिए कहीं भी जाने की जगह नहीं है।

थोड़े समय के लिए मूसा और फिर उसके शिष्य यहोशू, एक विशिष्ट स्थान पर स्थित सांसारिक राज्य के लिए लड़ाई में परमेश्वर के लोगों का नेतृत्व करेंगे। यीशु ने हमें, अपने शिष्यों को, एक आध्यात्मिक राज्य के लिए लड़ाई में परमेश्वर के लोगों का नेतृत्व करने का निर्देश दिया है। यहोशू (उसका दिया गया इब्रानी नाम यहोशू है) भालों और तलवारों का उपयोग करके एक लड़ाई का नेतृत्व करेगा, यीशु (उसका दिया गया इब्रानी नाम यहोशू है) ने हमें अपने भालों और तलवारों को नीचे रखने और मुख्य रूप से हमारे विश्वास, सुसमाचार सत्य और हमारे प्रेमपूर्ण कर्मों का उपयोग करके एक लड़ाई का नेतृत्व करने का निर्देश दिया है। फिर भी जब यीशु वापस आएगा, तो वह एक खूनी शारीरिक युद्ध लड़ेगा जैसा कि मूसा और यहोशू करने वाले थे।

पवित्र युद्ध के बारे में एक और बात (और मैं ऐसा इसलिए करता हूँ क्योंकि यही कारण है कि पुराने नियम को इतना बदनाम किया जाता है और हमारे नए नियम को इतना गलत समझा जाता है): पवित्र युद्ध वह नहीं है जो ईश्वर के नाम पर चलाया जाता है, बल्कि वह युद्ध है जो वास्तव में ईश्वर द्वारा चलाया जाता

है। यानी, तोरह में यह स्पष्ट किया गया है कि ईश्वर मूसा और यहोशू से आगे बढ़कर उन लोगों को हराने के लिए आगे आया है जिन्हें हराना है। संक्षेप में, पवित्र युद्ध में इस्राएल के लिए जो कुछ भी करना बाकी है, वह है आकर टुकड़े उठाना, ईश्वर दुश्मन को उनके हाथों में सौंप देगा। यह स्पष्ट किया गया है कि ईश्वर इस्राएली सेना का सर्वोच्च कमांडर है, और यह भी स्पष्ट किया गया है कि यह पवित्र युद्ध ईश्वर की प्रत्यक्ष भविष्यवाणी द्वारा निर्धारित किया गया है (यह मूसा या इस्राएल की पसंद पर नहीं है)।

इस सच्चे बाइबलीय पवित्र युद्ध की विशेषताओं में से एक यह है कि इसमें **हेरेम का व्यवस्था** लागू है। **हेरेम का नियम** कहता है कि जब की गई लूट को नष्ट किया जाना चाहिए और ऐसा इसलिए है क्योंकि चूंकि परमेश्वर सर्वोच्च कमांडर हैं, इसलिए यह सब उनका है। इब्रानी सोच में प्रभु परमेश्वर वास्तव में एक योद्धा हैं। लूट का विनाश सर्वोच्च कमांडर, यहोवा के लिए एक बलिदान के रूप में है, क्योंकि बाइबल के पवित्र युद्ध का भौतिक लाभ से कोई लेना-देना नहीं है। इसलिए बाइबल का पवित्र युद्ध (पुराना नियम प्रकार का, वैसे भी) ऐसा युद्ध नहीं है जिसका उद्देश्य धार्मिक रूपांतरण हो, न ही पराजितों से धन और श्रद्धांजलि प्राप्त करना, न ही दुश्मन को गुलाम बनाना। यह यह निर्धारित करने के लिए भी युद्ध नहीं है कि कौन जीतता है; परिणाम पहले से ही तय हो चुका है।

हालाँकि, जब हम परमेश्वर के नाम पर लड़े जाने वाले तथाकथित “पवित्र युद्ध” देखते हैं (भले ही ऐसे संघर्ष को शुरू करने के लिए परमेश्वर की ओर से कोई भविष्यवाणी न हो), ये युद्ध परमेश्वर द्वारा संचालित पवित्र युद्धों से बिल्कुल अलग प्रकृति के होते हैं। “परमेश्वर के नाम पर लड़े जाने वाले युद्ध कई बार इस्लामिक जिहाद की तरह दिखते हैं। वे कई बार जबरन धर्म परिवर्तन, गुलामी और लूटपाट और दुश्मन द्वारा श्रद्धांजलि देने के बारे में होते हैं (धर्मयुद्ध ऐसा ही एक प्रयास है, और इनक्विजिशन दूसरा)।

पद 3 में हमें व्यवस्थाविवरण में दी गई एकमात्र तिथि मिलती है, यह 40वें वर्ष के 11वें महीने का पहला दिन था, जिस दिन मूसा का यह विशेष संबोधन दिया जा रहा है। अब स्पष्ट करने के लिए, इसका मतलब यह नहीं है कि उन्हें मिस्र छोड़े हुए 40 वर्ष और 11 महीने हो चुके हैं। बाइबल जिस तरह से वर्षों की गणना करती है (और पुरातत्व भी) वह यह है कि वर्ष 11वें महीने के पहले दिन से शुरू होता है और अंतिम दिन पर समाप्त होता है। इसलिए जब इस्राएल मिस्र से 3 महीने के लिए चला गया था, तो इसे पहले वर्ष का तीसरा महीना कहा जाता था। दूसरे शब्दों में कोई वर्ष नहीं है, जिसे “शून्य” कहा जाता है।

इसलिए हमें जो बताया जा रहा है वह यह है कि इस्राएल को मिस्र से गए 39 वर्ष और 11 महीने हो गए हैं (एक महीना और बीतने पर यह ठीक 40 वर्ष हो जाएगा)। और हम जानते हैं कि मिद्यान और एमोरियों के साथ युद्ध उनके पीछे रह गए हैं क्योंकि पद 4 में सीहोन और ओग की हार की बात कही गई है, इसलिए हमारे पास समय का एक अच्छा संकेतक है।

पद 6 में जंगल के माध्यम से यात्रा पर एक पूर्वव्यापी विचार है और इसमें उन शक्तिशाली कार्यों की याद दिलाना शामिल है जो परमेश्वर ने किए ताकि इस्राएल उसे अपना परमेश्वर समझे। आश्चर्य की बात नहीं

है कि यह यात्रा के पहले भाग से शुरू होता है और इसलिए यह इस्राएल की पीढ़ी के लोगों के बारे में नहीं बोल रहा है जो अब मोआब में मूसा के सामने खड़े हैं, बल्कि निर्गमन की पहली पीढ़ी (जिस पीढ़ी को वह अब संबोधित कर रहा है, उससे पिछली पीढ़ी) के बारे में बोल रहा है जो अब सभी मर चुके हैं और चले गए हैं। और मूसा उन्हें याद दिलाता है कि इस्राएल को परमेश्वर ने (काफी अधीर तरीके से) बताया था कि अब माउंट सिनाई को छोड़ने और वादा किए गए देश में जाने का समय आ गया है जिसे उसने उनके लिए बहुत पहले से तैयार किया था।

इस बात को इस नई पीढ़ी के इस्राएलियों ने नहीं भुलाया कि अगर उनके माता-पिता आज्ञाकारी होते तो वे रेगिस्तान के किनारे धूल भरे रास्ते पर बकरी की खाल से बने तंबू के अंदर पैदा होने के बजाय दूध और शहद की भूमि में पैदा हो सकते थे। इस्राएल को लगभग 38 साल पहले ही कनान में बस जाना चाहिए था, और उस भूमि के फलों का आनंद लेना चाहिए था। आपको और मुझे इस बात को नहीं भूलना चाहिए क्योंकि यह सीधे हम पर और उन जीतों को हासिल करने की हमारी अनिच्छा पर लागू होता है जो परमेश्वर ने हमें पहले ही दे दी हैं, लेकिन हमसे आगे बढ़ने और काम और कार्रवाई में दावा करने की अपेक्षा करता है।

इस्राएल मूलतः आध्यात्मिक और शारीरिक रूप से 40 वर्षों तक निष्क्रिय रहा, क्योंकि उनमें विश्वास की कमी थी। वे समय को चिह्नित करते हुए, केवल अस्तित्व में रहते हुए, वृक्षाकार यात्रा करते रहे। वे वर्ष 40 में वादा किए गए देश के उतने करीब नहीं थे, जितना तब थे जब वे मिस्र से निकलने के बमुश्किल एक साल बाद थे। 38 साल पहले परमेश्वर के वादे में प्रवेश करने के बजाय, जैसा कि परमेश्वर ने उन्हें आदेश दिया था, उन्होंने कहा, “नहीं धन्यवाद, थोड़ा डरावना लग रहा है लगता है हम मिस्र में अपने पिछले जीवन में वापस चले जाएँगे। आप देखिए समस्या यह थी कि पहली पीढ़ी परमेश्वर में **विश्वास** करती थी, लेकिन वे उस पर भरोसा नहीं करते थे। वे लगातार मूसा (और यहोवा) को यह आलंकारिक प्रश्न पूछकर परेशान करते थे “परमेश्वर हमें यहाँ जंगल में मरने के लिए क्यों लाया? वे जानते थे कि यहोवा कौन है, उनका मानना था कि वह अस्तित्व में है और वह उनका परमेश्वर है। लेकिन उन्हें उनकी देखभाल करने की उनकी क्षमता या उनकी रक्षा करने और उनका मार्गदर्शन करने के उनके दृढ़ संकल्प पर भरोसा नहीं था। और इसलिए इस्राएल को वह हासिल करने में 40 साल लग गए जो उन्हें बहुत पहले मिल सकता था। यीशु के भाई याकूब ने इसे दूसरे तरीके से कहा “**याकूब 2:19 तू विश्वास करता है, कि परमेश्वर एक है तू अच्छा करता है और दुष्टात्मा भी विश्वास करते हैं। परन्तु हे मूर्ख, क्या तू यह भी जानता है, कि कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है?**”

निष्क्रिय आस्था बनाम सक्रिय वफादारी का यह ईश्वर-सिद्धांत बना हुआ है। छुटकारे को स्वीकार करना एक बात है, एक छुड़ाए हुए व्यक्ति के रूप में अब ईश्वर के प्रति आपके दायित्वों पर **कार्य करना**; और ईश्वर की आज्ञाओं पर जो वास्तव में केवल छुड़ाए हुए लोगों के लिए ही हैं, वे दूसरा हैं। इस्राएल को परमेश्वर द्वारा अपने नियम और आदेश दिए जाने से पहले ही छुड़ाया गया था। लेकिन, छुड़ाए गए लोगों के रूप में भी

वे प्रभु, उनके राज्य और उनके लिए उनके उद्देश्यों के लिए पूरी तरह से बेकार थे जब तक कि वे परमेश्वर पर भरोसा करने और उस भरोसे पर काम करने के लिए तैयार नहीं हुए।

मैं इस बात पर पर्याप्त जोर नहीं दे सकता कि ईसाई धर्म का वर्तमान आधुनिक निष्क्रिय रवैया गलत और शक्तिहीन है। हमारे सिद्धांतों ने यहाँ व्यक्त ईश्वर-सिद्धांत को सचमुच उलट दिया है। हमने परमेश्वर के छुटकारे (हमारे उद्धार) को स्वीकार करना प्रभु के प्रति पहला और अंतिम दायित्व या आज्ञाकारिता का कार्य बना लिया है, जो उसके साथ हमारे चलने में आवश्यक या अपेक्षित है। नहीं। नहीं। सबसे पहले हम अपने उद्धार को स्वीकार करते हैं (और जैसा कि संत पौलुस कहते हैं, इसे वास्तव में हमारे द्वारा किया गया कोई कार्य या अच्छा काम नहीं माना जाना चाहिए) और एक बार ऐसा होने के बाद, अब हमसे परमेश्वर पर अपने भरोसे के अनुसार कार्य करने की अपेक्षा की जाती है। और सोचिए अगर हम कार्य नहीं करते हैं तो क्या होता है? हम मूल रूप से निष्क्रियता की स्थिति में डाल दिए जाते हैं। बचना चाहते हैं और फिर निलंबित अवस्था में चले जाते हैं? ठीक है। प्रभु के पास इसके लिए एक नाम है, इसे "विद्रोह" कहा जाता है।

हमें छुड़ाया जाता है और फिर हमें यह ज्ञान दिया जाता है कि हर एक छुड़ाए गए व्यक्ति के पास पूरा करने के लिए दायित्व हैं, और हर व्यक्ति के पास राज्य के लिए चुने जाने का एक उद्देश्य है, तो उन दायित्वों का पालन न करना अवज्ञा है। क्या आपको आश्चर्य होता है कि आप 10 या 20 या उससे ज़्यादा सालों से मसीही क्यों हैं और आप अपने जीवन में उस समय से ज़्यादा आगे नहीं बढ़ पाए हैं जब आप पहली बार बचाए गए थे? क्या आपको ऐसा लगता है कि आप इस्राएलियों की तरह चक्कर लगा रहे हैं और अपने दिल में जानते हैं कि वास्तव में आपके और दुनिया के बीच कोई खास अंतर नहीं है? तो मेरे पास आपके लिए एक सवाल है आप क्या कर रहे हैं? अगर आप परमेश्वर की इच्छा के अनुसार नहीं कर रहे हैं तो आप ठीक उसी स्थिति में हैं जहाँ इस्राएल 40 सालों तक था। अगर आप परमेश्वर पर भरोसा नहीं करते और किनारे पर बैठने पर जोर देते हैं तो यह अवज्ञा है। आप भटक रहे हैं और परमेश्वर इंतज़ार कर रहा है और वह आपके भटकने से कहीं ज़्यादा समय तक इंतज़ार कर सकता है। लेकिन, ओह, जब हम उस मार्ग को चुनते हैं तो हमारी स्थिति कितनी दयनीय होती है। वे इस्राएली कितने दुखी थे जो यह नहीं समझ पाए कि परमेश्वर पर विश्वास करना और परमेश्वर पर भरोसा करना, दोनों ही बातें अलग-अलग हैं। और छुटकारा मनुष्य का अच्छा काम नहीं है, छुटकारा तब भी था और आज भी परमेश्वर का अच्छा काम है। हमारे अच्छे काम ही छुटकारे के बाद होते हैं। और उन अच्छे कामों के बिना, जैसा कि याकूब कहता है, हमारा विश्वास एक मरा हुआ विश्वास है।

पद 6 और 7 में मूसा ने भूमि के उन क्षेत्रों का नाम बताया है जिन्हें इस्राएल को लेना था: सबसे पहले उल्लेख किया गया है "एमोरियों का पहाड़ी इलाका। यह हमारे समय और युग में हमारी समझ के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वह क्षेत्र है जिसे आज "पश्चिमी तट" कहा जाता है।

और बेशक आप यह नहीं जानते होंगे कि तथाकथित फिलिस्तीनी इस भूमि पर दावा करते हैं और कहते हैं कि यहूदियों का इस पर कोई अधिकार नहीं है। एमोरियों के पहाड़ी देश का उल्लेख सबसे पहले

किया गया है क्योंकि यह इस्राएल का गढ़ बन जाएगा। राजा सुलैमान के समय के बाद भी जब इस्राएल दो राज्यों (उत्तर में एप्रैम इस्राएल और दक्षिण में यहूदा) में विभाजित हो गया, तो यह पहाड़ी देश दोनों राज्यों में शामिल हो जाएगा। यह पहाड़ी है, जलवायु में हल्का, उपजाऊ है, और इसमें अच्छा पानी उपलब्ध है। जब प्रभु इस्राएल के पहाड़ों की बात करते हैं तो पश्चिमी तट वह क्षेत्र है जिसका वर्णन किया जा रहा है।

इसके बाद अराबा की भूमि है, जो मृत सागर के उत्तर में है। इसमें यर्डन घाटी और उसके आसपास की पहाड़ियाँ शामिल हैं, यह एक और अत्यधिक समृद्ध, उपजाऊ और सुंदर क्षेत्र है।

शेफेला भूमि का वह क्षेत्र है जिसे हम "तलहटी" कह सकते हैं जो भूमध्य सागर के तट के साथ-साथ फैला हुआ है, यह महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें महत्वपूर्ण आश्रयगृह और आश्रयगृह थे जो भूमध्य सागर के द्वीपवर्ष, दक्षिण में अफ्रीकी महाद्वीप और उत्तर में तुर्की जैसे आधुनिक क्षेत्रों तक समुद्री मार्गों के माध्यम से व्यापार और यात्रा की अनुमति देते थे।

नेगेब भी वादा किए गए देश में शामिल है (और वैसे, कृपया इस क्षेत्र को ने-जेव न कहें, इब्रानी में ऐसा कोई कोमल "जी" नहीं है जो "जे" की तरह सुनाई दे: सभी "जी" ध्वनियाँ बकरी या गो की तरह कठोर "जी" हैं। इसलिए, इसे ने गेव उच्चारित किया जाता है)। जेगेव पर्वतीय क्षेत्रों के दक्षिण में एक सामान्य क्षेत्र है और सिनाई प्रायद्वीप तक जाता है, यह ज्यादातर रेगिस्तान है और यहीं पर वीरशेवा और कादेश-बर्नेआ स्थित हैं, और अंत में कृपया ध्यान दें कि यह कनानियों के समुद्र तट और लेबनान से लेकर महान नदी तक की बात करता है। महान नदी नील नदी नहीं है, यह फरात नदी है। और, यह समझ में आता है। प्रभु द्वारा बनाया गया वादा किया गया देश हमारे सामान्य विचार से कहीं अधिक उत्तर की ओर जाता है, और इसमें आधुनिक सीरिया और लेबनान शामिल हैं। लेबनान को कभी-कभी बाइबल में लेबो-हमात के रूप में संदर्भित किया जाता है। फरात नदी वास्तव में तुर्की के रास्ते सीरिया से होकर बहती है, और, दाउद और सुलेमान के शासनकाल के दौरान, यह क्षेत्र वास्तव में इस्राएल का हिस्सा था (उत्तरी समुद्र तट के हिस्से को छोड़कर जो फीनिशिया बन गया)।

हमने कुछ सप्ताह पहले चर्चा की थी कि वादा किए गए देश का तोरह विवरण यहजेकेल द्वारा वादा किए गए देश के विवरण से भिन्न है। और, संक्षेप में अंतर यह है कि यहजेकेल में भूमि तोरह में बताई गई भूमि से कुछ आगे पूर्व की ओर फैली हुई है। और, मैंने स्पष्टीकरण दिया कि यहजेकेल का संस्करण सहस्राब्दि राज्य के समय के दौरान घटित होता है। किसी भी मामले में अगर इस्राएल ने कनान पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करते समय प्रभु के निर्देशों का पालन किया होता, तो वे आज की तरह जमीन के टुकड़ों के लिए नहीं लड़ रहे होते, वे भूमध्य सागर से लेकर यर्डन नदी तक और सिनाई प्रायद्वीप के किनारे से लेकर तुर्की की दक्षिणी सीमा तक की सारी भूमि पर अधिकार कर लेते, जो कि एक बड़ा और सुरक्षित क्षेत्र होता।

पद 9 से 18 तक मूसा ने बताया कि उसने इस्राएल को कैसे संगठित किया, और कैसे उसने सरकार और नेतृत्व का पदानुक्रम स्थापित किया। हम विस्तार से नहीं बताएँगे, लेकिन यह जानकारीपूर्ण है कि यह

ठीक वैसा नहीं है जैसा हमने संख्याओं की पुस्तक में देखा था, उदाहरण के लिए संख्याओं में कहा गया है कि मूसा के ससुर यित्रो ने मूसा को इस्राएल के लिए एकमात्र न्यायाधीश और मध्यस्थ के रूप में देखा, और लोग सूर्योदय से सूर्यास्त तक लंबी लाइनों में खड़े होकर अपने मामलों की सुनवाई की प्रतीक्षा कर रहे थे। और, यह यित्रो ही था जिसने मूसा से कहा कि उसे अधिकार सौंपने की आवश्यकता है और ऐसा करने के लिए एक प्रणाली का सुझाव दिया।

व्यवस्थाविवरण के विवरण में मूसा ने कहा है कि, संक्षेप में, वह न्याय प्रक्रिया से निराश और थक गया था और उसने कबीलाई नेताओं से कहा कि उसे मदद की ज़रूरत है। और इसलिए उसने अपने धर्मनिरपेक्ष न्याय/नेतृत्व पदानुक्रम की स्थापना की जिसमें हर जनजाति से सैकड़ों सैकड़ों पुरुष शामिल होते हैं। जबकि इससे भी अधिक संख्या में हमें संकेत मिलता है कि लोगों को उन नेताओं और न्यायाधीशों को चुनने में बड़ी भूमिका थी, यहाँ पद 13 में मूसा स्पष्ट रूप से कहता है कि उसने लोगों से कहा कि वे उन लोगों को चुनें जो उनके ऊपर अधिकार रखेंगे। यदि कभी भी बाइबल में सरकार की लोकतांत्रिक (या, शायद बेहतर, एक प्रतिनिधि) प्रणाली का एक ठोस वर्णन और उदाहरण था, तो यह वही है।

और फिर मूसा ने कहा कि उसने कबीलाई नेताओं (अर्थात् ऐसे लोग जिन्हें अपने ही कबीले में अधिकार के अधिकार विरासत में मिले थे) के साथ-साथ बुद्धिमान और भरोसेमंद लोगों को भी लिया, जिन्हें लोगों ने चुना था और उन्हें नेता के रूप में नियुक्त किया था। तो, जाहिर है कि मूसा ने इस प्रक्रिया में योगदान दिया था और संभवतः वह कुछ लोगों को नेता के रूप में सुझा सकता था और दूसरों को अस्वीकार कर सकता था।

और यह आगे बताया गया है कि हर स्तर पर इन नेताओं (जिम्मेदारी के अपने सटीक क्षेत्र के आधार पर) को ईमानदार आदमी होना चाहिए; ऐसे आदमी जो ध्यान से और सम्मानपूर्वक सुनते हैं, और फिर न्यायपूर्ण तरीके से निर्णय लेते हैं। इसके अलावा, उन्हें किसी विदेशी की तुलना में किसी इस्राएली को तरजीह नहीं देनी चाहिए या इसके विपरीत। उन्हें सामाजिक स्थिति को ध्यान में नहीं रखना चाहिए, और गरीबों की तुलना में अमीरों को तरजीह नहीं देनी चाहिए। और, फिर पद 17 में एक छोटा सा वाक्य छिपा हुआ है जो वास्तव में कुछ ऐसा समझाता है जिसे यहूदी और ईसाई दोनों ने अपने-अपने कारणों से अलग रखा है, और जिसके दुखद परिणाम सामने आए हैं: **“किसी से मत डरो, क्योंकि न्याय परमेश्वर का है”**।

दूसरे शब्दों में, चूँकि परमेश्वर और केवल परमेश्वर ही व्यवस्था बनाने वाला है, इसलिए इस्राएल के इन चुने हुए नेताओं को परमेश्वर के नियमों का पालन करना चाहिए और हर उल्लंघन के लिए उचित परिणाम लागू करने चाहिए। परमेश्वर के नियमों का पालन करने के परिणामों की चिंता परमेश्वर को करनी चाहिए, न कि इन नेताओं को मनुष्य को यह तय करने की ज़रूरत नहीं है कि क्या सही है और क्या गलत: उन्हें बस वही लागू करना है जो परमेश्वर ने उन्हें पहले ही बता दिया है कि उसकी नज़र में क्या सही है और क्या

गलत। मनुष्य की नज़र में क्या सही है और क्या गलत है, इसका निर्णय प्रक्रिया में बहुत कम या कोई असर नहीं होना चाहिए।

मैं इसे दूसरे तरीके से कहता हूँ : शासन की व्यवस्था स्थापित होने से पहले व्यवस्था (तोरह) को पहले दिया जाना चाहिए था, अन्यथा मनुष्य न्याय को ठीक से प्रशासित नहीं कर सकते थे। ईश्वर का न्याय पूरी तरह से उनके नियमों में समाहित है। उनके नियम केवल यात्रिक सहिताएँ और अध्यादेश या क्या करें और क्या न करें की रोबोट प्रणाली नहीं हैं, व्यवस्था के भीतर प्रभु की इच्छा और दया, प्रेम, अनुग्रह और क्षमा का आह्वान अभिन्न अंग है। आज, यहूदी राज्य इस्त्राएल लगभग पूरी तरह से धर्मनिरपेक्ष है और ईश्वर के नियमों के प्रति कोई सम्मान नहीं रखता है, इसलिए उन्होंने अपनी स्वयं की प्रणाली का आविष्कार किया है और अपने स्वयं के दर्शन के अनुसार अपने स्वयं के आदर्श स्थापित किए हैं, और परिणाम स्पष्ट हैं। ईसाई धर्म के भीतर हम सचमुच हजारों संप्रदायों में विभाजित हो गए हैं, और एकता और भाईचारा एक दूर की याद बन गया है; कुछ संप्रदाय यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में भी नकारते हैं, अन्य उनके ईश्वरत्व को नकारते हैं, और फिर भी अन्य ईश्वर के लिखित वचन को अचूक या कविता और दंतकथा से अधिक कुछ भी नहीं मानते हैं। लगभग सभी ईसाई इस बात से इनकार करते हैं कि ईश्वर की न्याय प्रणाली अब भी मौजूद है। और, यहीं पर एक समस्या है। चर्च में ईश्वर के व्यवस्था को दरकिनार करके, हम **“किसी से नहीं डर सकते, क्योंकि न्याय ईश्वर का है”**। इसके बजाय, हमारे निर्णय ऐसे लोगों के हैं जो किसी विशेष संप्रदाय के उपनियमों और आस्था के लेखों को अपने मानक के रूप में उपयोग करते हैं, इस विश्वास के आधार पर कि हम जो करते हैं वह “हमारे दिलों को सही लगता है” के अनुसार है। और, ईश्वर के नियमों को दरकिनार करके जो कुछ भी सही है उसके पक्ष में परिणाम “हमारे दिलों” में जो वास करता है, वह स्पष्ट है।

हम अगली बार अध्याय 1 में आगे बढ़ेंगे।